विभिन्न माध्यमों के उपयोग

विभिन्न माध्यों का प्रयोग निम्न परिस्थितियों में किया जाना चाहिए–

(1) समान्तर माध्य (Arithmetic Mean)— समान्तर माध्य में आदर्श माध्य की अधिकांश विशेषताएँ पाई जाती हैं। इसलिए इसका सर्वत्र प्रयोग सम्भव है। आर्थिक व व्यापारिक क्षेत्र में इस माध्य का अधिक प्रयोग किया जाता है। आयात-निर्यात, लागत, उत्पादन व उपभोग की केन्द्रीय प्रवृत्ति ज्ञात करने के लिए समान्तर माध्य का प्रयोग होता है।

(2) मध्यका (Median)— गुणात्मक प्रकृत्ति के समंकों का विश्लेषण करने के लिए मध्यका का प्रयोग किया जाता है। उदारहणार्थ - ईमानदारी, योग्यता और बौद्धिक स्तर पर अध्ययन करने के लिए मध्यका श्रेष्ठ माध्य कहलाता है। खुले सिरे वाले आवृत्ति वितरण में माध्य के लिए मध्यका का प्रयोग किया जाता है।

(3) बहुलक (Mode)— यदि व्यापारिक, रीति-रिवाजों, ऋतु विज्ञान, जीवशास्त्रीय समस्या का अध्ययन करना हो या मूल्यों के अधिकतम संकेन्द्रण का बिन्दु ज्ञात करना हो जैसे जूतों का औसत नम्बर, कालर का औसत नम्बर, प्रति व्यक्ति औसत उत्पादन, तो बहुलक का प्रयोग करना चाहिए।

(4) गुणोत्तर माध्य (Geometric Mean)—गुणोत्तर माध्य का प्रयोग उन परिस्थितियों में अधिक श्रेष्ठकर होता है जब समंकों में अत्यधिक उतार-चढ़ाव हों या जब हमें अनुपातों, दरों के माध्य निकालने हों अथवा तत्यों में होने वाले सापेक्ष परिवर्तनों का अध्ययन करना हो। इसके अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि दर और निर्देशांकों की रचना करनी हो तो गुणोत्तर माध्य का ही प्रयोग करना चाहिए।

(5) हरात्मक माध्य (Harmonic Mean)—हरात्मक माध्य का प्रयोग औसत गति (average speed), चलन वेग (velocity), दर समय आदि का अध्ययन करने में किया जाता है।

अन्त में यह कहना अनुपयुक्त नहीं होगा कि अनुसन्धानकर्त्ता को समंकों के विश्लेषण के लिए माध्य का चुनाव उद्देश्य या आवृत्ति वितरण के अनुकूल ही होना चाहिए अन्यथा परिणाम भ्रामक होंगे। **एच॰ सेक्राइट** ने कहा है – "माध्यों के प्रयोग में पग-पग पर सावधानी, दूरदर्शिता एवं विश्लेषण आवश्यक है।" (Caution, foresight and analysis are necessary at every step in the use of average).

■

By-Dr. Sweety Jain.